केन्द्रीय बैंक एवं उसके कार्य
(Central Bank and Its Functions)

पाठ-संरचना

13.0 उद्देश्य
13.1 परिचय
13.2 केन्द्रीय बैंक की परिभाषा
13.3 केन्द्रीय बैंक के कार्य
13.4 केन्द्रीय बैंक और साख नियन्त्रण
13.5 साख-नियंत्रण की विधियाँ
13.5.1 बैंक दर नीति
13.5.2 खुले बाजार की क्रियाएँ
13.5.3 व्यापारिक बैंकों की रक्षित निधि के अनुपात में परिवर्तन
13.5.4 साख के प्रयोग पर नियंत्रण या गुणात्मक नियन्त्रण
13.6 सारांश
13.7 अभ्यास हेतु प्रश्न

13.0 उद्देश्य

इस पाठ के माध्यम से छात्र केन्द्रिय बैंक तथा उसके कार्यों से भली-भाँति परिचित होंगे। साख नियंत्रण की विभिन्न विधियों की जानकारी उन्हें प्राप्त होगी।

13.1 परिचय

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय बैंक का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि वह ऐसे कार्य करता है जिनपर देश की आर्थिक स्थिरता निर्भर होती है । वर्तमान समय में केन्द्रीय बैंक का महत्त्व इतना बढ़ गया है कि इनके बिना देश की अर्थव्यवस्था को अपूर्ण समझा जाता है । केन्द्रीय बैंक केवल मुद्रा व साख व्यवस्था का नियन्त्रण ही नहीं करता बल्कि वह अपनी क्रियाओं के द्वारा देश के सम्पूर्ण आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है । बिल रोगर्स (Will rogers) केन्द्रीय बैंक को मानवता के तीन महत्त्वपूर्ण आविष्कारों, अग्नि, चक्र एवं केन्द्रीय बैंक, में एक मानते हैं (There have been three great inventions since the beginning of timo : fire, the wheel and central banking.)

Scanned with CamScanner

13.2 केन्द्रीय बैंक की परिभाषायें

केन्द्रीय बैंक देश की मौद्रिक एवं बैंकिंग व्यवस्था का सिरमौर होता है । यह देश के आर्थिक हितों का ध्यान रखते हुए मुद्रा एवं साख का नियन्त्रण करता है । प्रो० केन्ट के शब्दों में, "केन्द्रीय बैंक वह संस्था होती है जिसे सामान्य सार्वजनिक हित में मुद्रा की मात्रा के विस्तार एवं संकुचन का उत्तरदायित्व दे दिया गया हो । (It may be defined as an inhstitution which is charged with the responsibility of managing the expansion and contraction of the volume of money in the interest of the general public welfare.)

केन्द्रीय बैंक की इसी प्रकार की परिभाषा बैंक ऑफ इन्टरनेशनल सेटेलमेन्ट (Bank of Internationa Setelement) के विधान में दी गई है, जिनके अनुसार "केन्द्रीय बैंक किसी देश का वह बैंक होता है जिसका कर्त्तव्य देश में साख व मुद्रा की मात्रा को नियन्त्रित करना होता है ।" (A Bank reguleting the volume of currency and credit of a country) डी० कॉक (De. Kock) ने केन्द्रीय बैंक की प्रकृति को बतलाते हुए लिखा है--"एक साधारण बैंक लाभ प्राप्त करने के लिए व्यापारिक उद्देश्यों पर चलाया जाता है किन्तु इसके विपरीत एक केन्द्रीय बैंक प्रारम्भिक रूप से देश की वित्तीय तथा आर्थिक स्थिरता की रक्षा करने के उत्तरदायित्व को अपने कन्धों पर लेने के लिए होता है । यह मुख्य रूप से लाभ को ध्यान में न रखते हुए केवल सम्पूर्ण देश के कल्याण तथा जनता के हित के लिए कार्य करता है ।" (An ordinary bank is run on business lines, with a view to earn Profits and Central Bank, on the other hand, is primarily meant to shoulder the view to earn Profit and Central Bank, on the other hand, is primrily meant to shoulder the responsibility of safeguarding the financial and economic stability of the country, it acts only in the public interest and for the welfare of the country as a whole and without regard to Profit as a primary consideration.)

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि केन्द्रीय बैंक देश की बैंकिंग व्यवस्था का स्वामी होता है। देश के सभी बैंक उसके नियंत्रण एवं निर्देशन में कार्य करते हैं और वह उनके लिए एक मित्र, दार्शनिक तथा पथ-प्रदर्शक (Friend, Philosopher and Guide) के रूप में कार्य करता है । वह देश में आर्थिक स्थिरता एवं आर्थिक विकास को ध्यान में रखकर मुद्रा एवं साख की मात्रा को नियंत्रित करता है ।

केन्द्रीय बैंक तथा व्यापारिक बैंकों में अन्तर :

इन दोनों में प्रमुख अन्तर निम्न प्रकार हैं-

1. **संस्था**-प्रत्येक देश में केन्द्रीय बैंक एक ही होता है किन्तु व्यापारिक बैंकों की संख्या अनेक होती है ।

2. **जनता के साथ व्यवसाय**-विशेष परिस्थितियों को छोड़कर केन्द्रीय बैंक को जन-साधारण के साथ व्यवसाय करने का अधिकार नहीं होता ।

3. **स्वामित्व**-स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में व्यापारिक बैंक साधारणतया सम्मिलित पूँजी या अंशधारियों के बैंक होते हैं किन्तु अधिकांश देशों में केन्द्रीय बैंक का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया है ।

Scanned with CamScanner

4. केन्द्रीय बैंक अपने जमा धन पर ब्याज नहीं दे सकता जबकि व्यापारिक बैंक अपनी जमाओं पर ब्याज देते हैं ।

5. उद्देश्य–व्यापारिक बैंकों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है । परन्तु केन्द्रीय बैंक का प्रमुख उद्देश्य अर्थव्यवस्था में मौद्रिक एवं बैंकिंग नियंत्रण करना होता है ।

6. केन्द्रीय बैंक अन्तिम समय का ऋणदाता (lender of the last resort) कहा जाता है । यह ऋणदाता होता है और व्यापारिक बैंक ऋणी होता है ।

7. सम्बन्ध–केन्द्रीय बैंक, बैंकों का बैंक होता है । व्यापारिक बैंक उसके ग्राहक होते हैं । व्यापारिक बैंक अपने जमा धन का एक निश्चित प्रतिशत केन्द्रीय बैंक में जमा रखता है ।

13.3 केन्द्रीय बैंक के कार्य (Functions of Central Bank)

केन्द्रीय बैंक के कार्यों के सम्बन्ध में विभिन्न लेखकों ने भिन्न-भिन्न मत प्रकट किए हैं । कुछ अर्थशास्त्रियों ने केन्द्रीय बैंक के एक प्रकार के कार्यों पर जोर दिया है तो कुछ अन्य ने दूसरे प्रकार के कार्यों को अधिक महत्त्वपूर्ण बताया है । केन्द्रीय बैंक के महत्त्व तथा कार्यों का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें उसके द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले विभिन्न कार्यों का पूर्णत: अध्ययन करना चाहिए। केन्द्रीय बैंक के निम्नलिखित प्रमुख कार्य हैं–

1. **नोट निर्गमन का एकाधिकार (Monopoly of Note-issue)**— आरम्भ में नोटों के निर्गमित करने का कार्य राज्य का था । व्यापारिक बैंकों के विकास के बाद यह कार्य बैंकों को ही दे दिया गया । किन्तु आज लगभग सभी देशों में नोट निर्गमन का एकाधिकार केन्द्रीय बैंक के पास हैं ।

केन्द्रीय बैंक इस कार्य के लिए सबसे अधिक उपयुक्त हैं, क्योंकि वह इस कार्य को राष्ट्रहित में करता है । केन्द्रीय बैंक इस कार्य को लाभ की आशा से नहीं, केवल समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नोट जारी करता है । केन्द्रीय बैंक को नोट निर्गमन का कार्य-भार सौंपने से नोटों के प्रचलन में अनुरूपता आई तथा पत्र-मुद्रा में लोगों का विश्वास भी बढ़ा । केन्द्रीय बैंक के नोट निर्गमन का कार्य करने के चलते साख निर्माण पर नियन्त्रण करने में सुविधा हुई है तथा आन्तरिक एवं बाह्य मूल्य में स्थायित्व लाने में भी सफलता मिली है ।

2. **बैंकों के बैंकर का कार्य (Banker of Banks)**— केन्द्रीय बैंक देश में अन्य बैंकों के बैंकर का कार्य करता है । देश में सभी बैंकों को अपनी कुल जमा का एक निश्चित भाग केन्द्रीय बैंक के पास रखना पड़ता है । केन्द्रीय बैंक का अन्य बैंक के साथ ठीक वही सम्बन्ध है जो बैंक का अपने ग्राहकों के साथ होता है । वह इन बैंकों से जमा प्राप्त करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उन्हें ऋण भी देता है । बैंकों के बैंक के रूप में केन्द्रीय बैंक का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य बैंकों को ऋण तथा अग्रिम प्रदान करना है । केन्द्रीय बैंक को अन्तिम ऋणदाता (Lender of the last resort) कहा जाता है क्योंकि जब किसी बैक को अन्य किसी भी स्रोत से ऋण प्राप्त नहीं होता, तो वह केन्द्रीय बैंक से सहायता ले सकता है । इस तरह संकट की घड़ी में केन्द्रीय बैंक, बैंकों को ऋण देकर फेल होने से बचाता है ।

3. **सरकार के बैंकर का कार्य (Banker to Government)**— केन्द्रीय बैंक सरकार के बैंकर तथा एजेन्ट के रूप में कार्य करता है । इस रूप में केन्द्रीय सरकारी कोषों का संरक्षण करता है और

Scanned with CamScanner

विभिन्न सरकारी विभागों के खातों का हिसाब रखता है । सरकारी करों की राशि केन्द्रीय बैंक में जमा होती है और आवश्यकता पड़ने पर केन्द्रीय बैंक सरकार को ऋण भी देता है । यह सरकार की ओर से विदेशी मुद्राओं तथा प्रतिभूतियों को खरीदता और बेचता है, सरकारी ऋणों का प्रबन्ध करता है और आर्थिक मामलों में सरकारी अभिकर्त्ता के रूप में कार्य करता है । यह सरकार के जमा धन पर उसको कोई ब्याज नहीं देता और न अपने द्वारा की जाने वाली सोवाओं पर वह उससे कोई शुल्क ही लेता है । केन्द्रीय बैंक सरकार के आर्थिक सलाहकार के रूप में भी कार्य करता है । मौद्रिक तथा बैंकिंग मामलों में सरकार केन्द्रीय बैंक से सलाह लेती है । डी. कॉक (Dekock) के अनुसार केन्द्रीय बैंक सरकारी बैंकर के रूप में कार्य केवल इसलिए नहीं करता है कि ऐसा करना सरकार के लिए सुविधापूर्ण एवं मितव्ययी है, वरन् इसलिए भी, क्योंकि मौद्रिक मामलों में और सार्वजनिक वित्त का गहरा सम्बन्ध है । (The Central bank operates as the government's banker not only because it is more convenient and economical to the government but also because of the interimate connection between public finance and monetary officers.)

4. साख नियन्त्रण का कार्य (Control of Credit)— साख मुद्रा का नियन्त्रण केन्द्रीय बैंक का प्रमुख कार्य माना जाता है । अन्य सभी कार्य इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किये जाते हैं । वर्त्तमान समाज में साख, मुद्रा से भी अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है । अत: केन्द्रीय बैंक का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह आवश्यकतानुसार साख की मात्रा में वृद्धि या कमी कर मूल्यों में स्थायित्व लाने का प्रयास करे । केन्द्रीय बैंक साख नियन्त्रण के लिए बैंक दर में परिवर्त्तन, खुले बाजार क्रियाएँ, बैंकों पर वैधानिक प्रतिबन्ध आदि अस्त्रों को अपनाता है ।

5. राष्ट्र के स्वर्ण तथा विदेशी विनिमय कोषों का संरक्षण (Custodian of the Nation's gold Reserve and Foreign Currencies)— केन्द्रीय बैंक राष्ट्र के बहुमूल्य धात्विक कोष तथा विदेशी विनिमय कोषों का संरक्षक होता है, देश का समस्त स्वर्ण तथा विदेशी विनिमय कोष केन्द्रीय बैंक के पास होता है । केन्द्रीय बैंक का यह दायित्व होता है कि वह विदेशी विनिमय प्रबन्ध के द्वारा विदेशी विनिमय दरों में स्थिरता स्थापित करे । विदेशी मुद्रा कोष देश की अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति की दृढ़ता का परिचायक होता है, अत: इसे उचित स्तर पर बनाये रखना केन्द्रीय बैंक का पावन कर्त्तव्य है ।

6. निकासी गृह कार्य (Clearing House)— प्रत्येक देश में निकसी गृह या समाशोधन गृह का कार्य केन्द्रीय बैंक ही करता है । केन्द्रीय बैंक इस कार्य के लिए सबसे उपयुक्त संस्था होती है क्योंकि देश के सभी बैंकों का हिसाब केन्द्रीय बैंक के पास रहता है जिससे आपसी लेन देन को निबटाने में सुविधा होती है ।

7. मुद्रा-मूल्य में स्थायित्व (Stability in the Value of Money)— केन्द्रीय बैंक का एक महत्त्वपूर्ण कार्य मुद्रा के मूल्य में स्थायित्व लाना है । मुद्रा के मूल्य में परिवर्त्तन होने के कारण वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य भी प्रभावित होते हैं । इसके कारण मुद्रा स्फीति या मुद्रा संकुचन का डर बना रहता है । अत: यह आवश्यक होता है कि केन्द्रीय बैंक जो देश में सुदृढ़ मौद्रिक व्यवस्था के लिए जिम्मेवार है, मूल्यों में स्थिरता बनाये रखने का भरपूर प्रयत्न करें ।

Scanned with CamScanner

8. विदेशी विनिमय में स्थिरता (Stability in the Foreign Exchange Rate)— विदेशी व्यापार को बढ़ाने एवं विदेशी व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिए आवश्यक है कि विदेशी विनिमय दर में स्थिरता बनी रहे। केन्द्रीय बैंक का यह महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य हो जाता है कि वह विदेशी विनिमय दर में स्थिरता कायम करें।

9. सूचनाओं एवं आँकड़ों को एकत्र करना (Collection of Information and Statistics)— केन्द्रीय बैंक विभिन्न प्रकार के आवश्यक आँकड़ों एवं सूचनाओं को एकत्रित करने एवं प्रकाशित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। इन सूचनाओं एवं आँकड़ों के आधार पर आर्थिक, व्यापारिक एवं मौद्रिक स्थितियों की समीक्षा भी केन्द्रीय बैंक प्रकाशित करता है या दूसरे प्रकाशनों के माध्यम से जनता को उपलब्ध कराता है। ये आँकड़े देश की आर्थिक नीति के आधार होते हैं तथा इनसे आर्थिक नियोजन में मदद मिलती है।

इस तरह यह स्पष्ट है कि केन्द्रीय बैंक देश की मौद्रिक एवं बैंकिंग क्षेत्र की सर्वोच्च संस्था होने के कारण अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। आज की मुद्रा एवं साख प्रधान दुनिया में केन्द्रीय बैंक के बिना किसी अर्थव्यवस्था की कल्पना नहीं कर सकते। यद्यपि आज भी इस बात को लेकर अर्थशास्त्रियों में मतभेद है कि केन्द्रीय बैंक का सबसे आवश्यक कार्य कौन है? फिर भी इसमें कोई मतभेद नहीं है कि देश की मौद्रिक एवं बैंकिंग व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए केन्द्रीय बैंक को उपरोक्त सभी कार्यों को करना चाहिए।

13.4 केन्द्रीय बैंक और साख नियन्त्रण (Central Bank and Credit Control)

अधिकांश विद्वानों ने साख नियन्त्रण को केन्द्रीय बैंक का प्रमुख कार्य माना है। प्रो० शॉ के अनुसार तो यह केन्द्रीय बैंक का एक मात्र कार्य है। (The one true but at the same time all sufficing function of a central bank is control of Credit) डी. कॉक (De Kock) ने इस कार्य में महत्त्व को बताते हुए लिखा है–"खास नियन्त्रण को अधिकांश अर्थशास्त्रियों तथा बैंक ने केन्द्रीय बैंक का प्रमुख कार्य स्वीकारा है। यही कारण है कि साख नियन्त्रण को केन्द्रीय बैंक का आधारभूत कार्य माना जाता है।

13.5 साख नियंत्रण की विधियाँ

केन्द्रीय बैंक साख नियंत्रण के लिए विभिन्न उपायों को अपनाता है जिन्हें हम साख नियंत्रण के अस्त्र (Instrument of credit control) कहते हैं। साख नियंत्रण के विभिन्न उपायों को हम दो भागों में बाँट सकते हैं–

(क) साख की मात्रा पर नियंत्रण या संख्यात्मक नियंत्रण (Quantitative control) तथा

(ख) साख के प्रयोग पर नियंत्रण या गुणात्मक नियंत्रण (Qualitative control)।

दोनों ही प्रकार के नियंत्रण आर्थिक स्थिरता तथा विकास के लिए आवश्यक हैं। संख्यात्मक नियंत्रण के प्रमुख तरीके निम्नलिखित हैं :

13.5.1 बैंक दर नीति (Bank Rate Policy) :

बैंक दर नीति साख नियंत्रण का एक महत्त्वपूर्ण तरीका रहा है। बैंक दर नीति के अन्तर्गत

Scanned with CamScanner

केन्द्रीय बैंक अपनी बैंक दर में परिवर्त्तन करके साख की मात्रा को नियंत्रित करता है । बैंक दर वह न्यूनतम ब्याज की दर होती है जिस पर केन्द्रीय बैंक प्रथम श्रेणी के बिलों को पुन: भुनाता है अथवा स्वीकृत प्रतिभूतियों के आधार पर ऋण देता है । संक्षेप में, यह केन्द्रीय बैंक की उधार देने की ब्याज की दर होती है । बैंक दर का सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि यह बाजार दर (Market rate of Interest) के साथ-साथ चलती है । (The theory of underlying the use of discount rate was briefly that change in the discount rate of the central bank would bring about more or less corresponding changes in local money rates generally—De. Kock)

यदि बैंक-दर को बढ़ा दिया जाता है तो सूद की दरें भी बढ़ जाती हैं और ऋणों का लेना महँगा हो जाता है जिससे साख का संकुचन होता है । इसके विपरीत जब बैंक-दर को घटाया जाता है तो बाजार में अन्य ब्याज की दरों में कमी होने के कारण ऋणों का लेना सस्ता एवं लाभदायक हो जाता है जिससे साख का संकुचन होता है ।

जब केन्द्रीय बैंक को साख की मात्रा कम करनी होती है तो वह बैंक-दर को बढ़ा देता है । फलत: बाजार-दर भी बढ़ जाती है । इसके विपरीत यदि साख का विस्तार करना है तो केन्द्रीय बैंक, बैंक-दर को घटा देता है । फलत: बाजार में सूद की दर भी कम हो जाती है और साख-विस्तार को प्रोत्साहन मिलता है । व्यापारिक बैंक को ब्याज-दर कम करने से ऋण लेना आसान हो जाता है, ऋणों की माँग बढ़ती है और साख का विस्तार होता है ।

बैंक-दर की सफलता के लिए यह आवश्यक है :

(i) बैंक-दर में परिवर्त्तन के साथ-साथ ब्याज की दरों में भी उसी प्रकार परिवर्त्तन हो जाय । ऐसा केवल एक सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित मुद्रा-बाजार में ही हो सकता है ।

(ii) ब्याज की दर बदलने पर ऋणों की माँग में परिवर्तन होना चाहिए । लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यापारी भविष्य के प्रति आशावान हैं या नहीं ।

(iii) देश की अर्थव्यवस्था लोचपूर्ण होनी चाहिए–अर्थव्यवस्था में इतनी लोच होनी चाहिए कि बैंक-दर में होने वाले परिवर्तन मूल्यों, मजदूरों तथा ब्याज की दरों, मौद्रिक आय तथा व्यापार पर अपना पूरा प्रभाव डाल सकें । किन्तु प्रथम महायुद्ध के पश्चात् विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था में लोच का अभाव हो जाने के कारण बैंक-दर नीति अप्रभावी हो गई है और इसलिए बैंक-दर नीति का प्रयोग पहले की अपेक्षा कम होने लगा है ।

13.5.2 खुले बाजार की क्रियाएँ (Open Market Operation) :

साख नियंत्रण के उद्देश्य से बैंक द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय करने को खुले बाजार की क्रियाएँ कहा जाता है । किन्तु विस्तृत अर्थ में केन्द्रीय बैंक अथवा सरकार के द्वारा मुद्रा बाजार में किसी भी प्रकार की प्रतिभूतियाँ ऋण पत्रों तथा बिलों के क्रय-विक्रय करने का खुले बाजार की क्रियाओं के अन्तर्गत शामिल किया जा सकता है । प्रथम महायुद्ध के बाद सर्वप्रथम साख नियंत्रण के लिए खुले बाजार की क्रियाओं का प्रयोग बैंक-दर नीति के पूरक के रूप में किया गया । किन्तु धीरे-धीरे इसका महत्त्व बढ़ता गया और आज साख का अनावश्यक विस्तार तथा संकुचन रोकने के लिए खुले बाजार की क्रियाओं का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है ।

Scanned with CamScanner

खुले बजार की क्रियाओं द्वारा अन्य बैंकों के नकद कोषों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डाला जा सकता है जिसके द्वारा देश में साख की कुल मात्रा को घटाया बढ़ाया जा सकता है । केन्द्रीय बैंक जब सरकारी प्रतिभूतियों को बेचता है तब बाजार में मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है और साख का संकुचन होता है । ठीक इसके विपरीत जब केन्द्रीय बैंक प्रतिभूतियों को खरीदता है तब बाजार में मुद्रा की मात्रा बढ़ती है और साख का विस्तार होता है ।

खुले बाजार की क्रिया को बैंक दर नीति की अपेक्षा साख नियंत्रण का अधिक प्रभावशाली अस्त्र माना जाता है क्योंकि साख की मात्रा पर इसका प्रभाव प्रत्यक्ष तथा निश्चित होता है । प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय का बैंकों के कोषों पर सीधा प्रभाव पड़ता है और इस विधि के द्वारा साख की मात्रा को तुरन्त घटाया-बढ़ाया जा सकता है । इसी कारण खुले बाजार की क्रियाओं को साख नियंत्रण विधि के रूप में बैंक दर नीति से श्रेष्ठ समझा जाता है ।

किन्तु खुले बाजार की क्रियाएँ केवल कुछ विशेष परिस्थितियों में ही सफल होती हैं । सामान्य खुले बाजार की क्रियाओं की सफलता के लिए निम्नलिखित शर्तों का होना आवश्यक है :

(i) खुले बाजार की क्रियाओं की सफलता के लिए आवश्यक है कि मुद्रा बाजार सुव्यवस्थित तथा सुसंगठित हो ।

(ii) केन्द्रीय बैंक में प्रतिभूतियों को बेचने तथा खरीदने की पर्याप्त शक्ति होनी चाहिए ।

(iii) खुले बाजार की क्रियाओं का अन्य बैंकों के कोषों पर निश्चित प्रभाव पड़ना चाहिए ।

(iv) नकद कोषों में परिवर्त्तन होने पर बैंकों के द्वारा साख का विस्तार अथवा संकुचन किया जाना चाहिए।

(v) बैंक के कोषों में परिवर्त्तन होने से साख की माँग में भी परिवर्त्तन होना चाहिए ।

प्रो० हॉट्रे के अनुसार केन्द्रीय बैंक साख नियन्त्रण तभी प्रभावशाली ढंग से कर सकता है जबकि खुले बाजार की क्रियाओं तथा बैंक दर नीति का साथ-साथ प्रयोग किया जाय । प्रो० क्लार्क के अनुसार, ''साख नियन्त्रण के दृष्टिकोण से खुले बाजार की क्रियाएँ बैंक-दर नीति की पूरक हैं ।'' इस तरह स्पष्ट है कि साख नियंत्रण की इन दोनों विधियों का साथ-साथ प्रयोग सफलतापूर्वक साख नियंत्रण के लिए आवश्यक है ।

13.5.3 व्यापारिक बैंकों की रक्षित निधि के अनुपात में परिवर्त्तन (Variation in Reserve Ratio of Banks) :

देश में प्रत्येक बैंक को अपनी जमा का एक निश्चित प्रतिशत केन्द्रीय बैंक इस अनुपात को घटा बढ़ाकर व्यापारिक बैंकों की साख निर्माण करने की शक्ति में परिवर्त्तन कर सकता है । जब केन्द्रीय बैंक साख का संकुचन करना चाहता है तो वह इस रक्षित निधि के प्रतिशत को बढ़ा देता है जिसके कारण केन्द्रीय बैंक के पास अधिक राशि जमा करनी पड़ती है और व्यापारिक बैंकों के पास कम नकद कोष रह जाता है जिसके आधार पर वे कम साख का निर्माण कर पाते हैं । इसके विपरीत यदि केन्द्रीय बैंक साख का अधिक विस्तार करना चाहता है तो वह रक्षित निधि के अनुपात को घटा देता है जिसके फलस्वरूप बैंकों के पास नकद कोषों की मात्रा अधिक रहने के कारण वे अधिक साख का सृजन कर सकते हैं । अतः केन्द्रीय बैंक के द्वारा रक्षित निधि के अनुपात में वृद्धि कर साख का संकुचन किया जा सकता है और उसे कम करके साख की मात्रा को बढ़ाया जा सकता है ।

Scanned with CamScanner

यह विधि प्रत्यक्ष होने के कारण अधिक प्रभावशाली होती है। किन्तु इसमें एक गम्भीर दो यह है कि रक्षित निधि अनुपात में परिवर्तन करने का सब बैंकों पर एक सा प्रभाव नहीं पड़ता है बड़े बैंकों की तुलना में छोटे बैंकों की कठिनाई रक्षित कोष अनुपात में वृद्धि करने से बढ़ जाती है दूसरी कठिनाई यह है कि व्यापारिक बैंक रक्षित निधि अनुपात में वृद्धि करने पर भी साख सृजन कमी नहीं करते।

इन सीमाओं के होते हुए भी साख नियन्त्रण की यह विधि विशेष महत्त्व रखती है। इसलि Burgess ने लिखा है कि "सीमाओं के होते हुए भी बैंकों के रक्षित कोष के अनुपात में परिवर्त करने की शक्ति, विशेषतया अवसाद के कारण उत्पन्न अत्यधिक कोषों की स्थिति को ठीक करने लिए साख नियन्त्रण की व्यवस्था में सर्वा- धिक उपयोगी है।

13.5.4 साख के प्रयोग पर नियन्त्रण या गुणात्मक नियन्त्रण (Selective Credit Contro or Qualitative Credit Control) :

उपरोक्त विधियों के द्वारा केवल साख की मात्रा को नियन्त्रित किया जा सकता है किन्तु आ की नियोजित अर्थव्यवस्थाओं के लिए साख के प्रयोग पर भी नियन्त्रण आवश्यक है। साख के प्रयो को अनियन्त्रित छोड़ना योजना के उद्देश्यों के पूरा होने के मार्ग में बाधक हो सकता है। अतः आवश्य है कि साख की मात्रा के साथ-साथ साख के प्रयोग पर भी नियन्त्रण हो। साख के प्रयोग को निम्नांकि विधियों द्वारा केन्द्रीय बैंक नियन्त्रित करता है–

(i) ऋणों की आवश्यक सीमा में परिवर्तन (Change in the Margin or Rquirement)– केन्द्रीय बैंक विभिन्न प्रकार के ऋणों की सीमा, आवश्यकता में परिवर्तन करके साख के प्रयोग नियन्त्रित कर सकता है। इस प्रकार की नीति का मुख्य उद्देश्य साख को सट्टे तथा अन्य अनुपयो कार्यों से हटाकर उपयोगी तथा आवश्यक कार्यों में लगाना होता है। उत्पादक क्षेत्रों में साख के प्र को बढ़ाने के लिए केन्द्रीय बैंक इस प्रकार के ऋणों की सीमा आवश्यकता को कम कर देता है

नैतिक प्रभाव (Moral Effect)— नैतिक प्रभाव के नीति की द्वारा केन्द्रीय बैंक साख की तथा उसके प्रयोग दोनों पर नियन्त्रण रखने का प्रयत्न करता है। इसका मुख्य उद्देश्य बैंक प्रबन्धको ऐसा मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालना होता है जिससे कि वे केन्द्रीय बैंक की साख नीति को सफल ब के लिए पूरा सहयोग देने के लिए तैयार हो सकें। यदि केन्द्रीय बैंक प्रभावशाली एवं शक्तिशाली तो उसको नैतिक प्रभाव की नीति से अधिक सफलता मिल सकती है।

इस तरह स्पष्ट है कि इस नीति की सफलता के लिए केन्द्रीय बैंक तथा अन्य वैंकों के ब सहयोग तथा सद्भाव का वातावरण रहना चाहिए तथा देश के मुद्रा बाजार एवं व्यावसायिक बैंकों केन्द्रीय बैंक का पूर्णतः नियन्त्रण रहना चाहिए। शायद यही कारण है कि इंगलैंड में इस नीति काफी सफलता मिली है, किन्तु भारत में यह नीति सफल नहीं हो सकी है।

(iii) प्रत्यक्ष कार्यवाही (Direct Action) — जब केन्द्रीय बैंक देखता है कि कुछ व्यापा बैंक तथा अन्य साख संस्थाएँ उसकी घोषित नीति के अनुसार कार्य नहीं कर रहा है तो वह उ विरुद्ध सीधी कार्यवाही की नीति को अपनाता है। इस नीति के अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक इन असहय संस्थाओं के विनिमय पत्रों तथा हुण्डियों को भुनाने से इन्कार कर देता है या उनसे दण्ड के रूप ऋणों पर अधिक ब्याज वसूल करता है, किन्तु प्रत्यक्ष कार्यवाही की यह नीति साख नियन्त्रण की अ विधि नहीं समझी जाती। इसलिए इसका प्रयोग संकट काल या विशेष परिस्थितियों में ही किया ज है।

Scanned with CamScanner

(iv) साख की राशनिंग (Rationing of Credit)— केन्द्रीय बैंक अपने द्वारा दी जाने वाली साख की अधिकतम सुरक्षित सीमा निश्चित कर देता है और फिर विभिन्न बैंकों का अभ्यांश (quota) निर्धारित कर दिया जाता है । यद्यपि साख राशनिंग के द्वारा साख की मात्रा तथा उसके प्रयोग दोनों पर ही नियन्त्रण किया जा सकता है, किन्तु साख के प्रयोगों को नियन्त्रित करने के लिए यह विधि अधिक उपयोगी होती है । केन्द्रीय बैंक विभिन्न प्रकार के ऋणों तथा विनियोगों के लिए साख की अधिकतम सीमा निश्चित कर देता है और इन निश्चित उद्देश्यों के लिए ही साख का प्रयोग किया जाता है । इस प्रकार अनुपयोगी तथा अनावश्यक कार्यों के लिए साख का प्रयोग नहीं होने दिया जाता है। भारत जैसे देश में जहाँ आर्थिक विकास के लिए आर्थिक नियोजन चल रहा है, मुद्रास्फीति को नियन्त्रण में रखना आवश्यक होता है । अत: साख की राशनिंग साख के प्रयोग को नियन्त्रित करने के लिए आवश्यक अस्त्र हो सकती है ।

(V) उपभोक्ता साख पर नियन्त्रण (Regulation of Consumer's Credit)— उपभोक्ताओं को दी जाने वाली साख पर नियन्त्रण करके भी केन्द्रीय बैंक साख की मात्रा तथा उसके प्रयोगों को नियन्त्रित कर सकता है । इस नीति के अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक उपभोक्ताओं को दी जाने वाली किस्त-साख की अधिकतम सीमा तथा इस प्रकार के ऋणों के भुगतान की अधिकतम अवधि निश्चित कर देता है । केन्द्रीय बैंक जब साख का विस्तार करना चाहता है (जैसे–अवसाद काल में) तो वह किस्त-साख की सुविधाओं को बढ़ा देता है और जब वह साख का संकुचन करना चाहता है (जैसे मुद्रास्फीति काल में) तो किस्त साख की सुविधाओं को कम कर दिया जाता है ।

(vi) प्रचार (Publicity) – केन्द्रीय बैंक अपनी नीतियों की सफलता के लिए प्रचार के माध्यम से कीमत भी तैयार करता है । जिन देशों में नागरिक शिक्षित होते हैं वहाँ विज्ञापन प्रचार केन्द्रीय बैंकों की साख मुद्रा नियंत्रण नीति का एक मुख्य अंग हो जाता है ।

13.6 सारांश

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि केन्द्रीय बैंक साख नियंत्रण के लिए विभिन्न अस्त्रों को अपनाता है; किन्तु निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि केन्द्रीय बैंक अपने इस कार्य में पूर्णत: सफल नहीं हो पाया है । स्फीति तथा अवस्फीति की भयानक घटनाएँ अब भी अर्थव्यवस्था को अस्त-व्यस्त करती रहती हैं । इसलिए अब मुद्रा स्फीति को रोकने के लिए मौद्रिक नीति के साथ-साथ राजकोषीय नीति (Fiscal policy) का भी सहयोग लिया जाता है ।

13.7 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. केन्द्रीय बैंक क्या है ? इसके प्रमुख कार्यों की व्याख्या कीजिए ।

   (What is Central Bank ? Discuss its main functions)

2. केन्द्रीय बैंक किस प्रकार साख नियंत्रण करता है ? विस्तार से वर्णन करें ।

   (How does a Central Bank control credit ? Discuss in detail)

Scanned with CamScanner